पवित्र मन्दिर

(2:19-22)

द लायन किंग फिल्म ने लाखों लोगों के मनों को प्रभावित किया है। इस फिल्म में शेर के बच्चे सिज़्बा की कहानी है, जिसने बड़ा होकर अपने इलाके का राजा बनना था। एक जगह, सिज़्बा जंगल में भटक जाता है। नन्हा, अनाड़ी शेर घर से दूर एक नई जगह रहने लगता है। वहां वह राजकुमार की तरह बिल्कुल नहीं रहता। वह अपनी स्थिति और शान से बहुत निचले स्तर का जीवन गुजारता है।

मसीही लोग भी सिज़्बा की तरह हो सकते हैं। हो सकता है कि हम मसीही वातावरण या माहौल से निकलकर ऐसे लोगों की तरह व्यवहार न करें, जिन्हें मृत्यु से जीवन में लाए गए लोगों की तरह रहना चाहिए। हम परमेश्वर की नई जाति के लोगों के रूप में अपनी असली पहचान भूल सकते हैं।

भावी राजा सिज़्बा को तब तक होश नहीं आया जब तक उसे एक बार फिर से इस बात की झलक नहीं मिली कि वह ज़्या बनने वाला था। हमारे लिए भी यही बात सत्य है। हमें आवश्यकता है कि हम फिर से देखें कि परमेश्वर हमारे जीवनों में ज़्या चाहता है और वह हमारे भविष्य के लिए ज़्या इच्छा करता है।

इफिसियों 2 अध्याय के दूसरे ज़ाग में, पौलुस ने इफिसुस के मसीही लोगों को यही करने की कोशिश की। उसने उन्हें मसीही लोगों के जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह के असर की झलक दी और उसके लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा बताई।

2:11-18 में, पौलुस ने हमारे जीवनों में परमेश्वर के अनुग्रह के बारे में इस सच्चाई का सुझाव दिया: परमेश्वर के अनुग्रह से हमें मनुष्यजाति की एक नई जाति में बनाया गया है। परमेश्वर चाहता है कि हम अपने आप को पहले वाली स्थिति से थोड़े से अन्तर के साथ नहीं बल्कि ''मसीह के लहू के द्वारा'' अस्तित्व में लाए गए एक नए समाज के रूप में देखें (कुलुस्सियों 2:13)।

2:19-22 में पौलुस ने तस्वीर बदल दी: परमेश्वर के अनुग्रह ने हमें पवित्र मन्दिर के रूप में बदल दिया है। हो सकता है कि आपके जीवन से यह पता न चल पाए। न मेरे जीवन से। सिज़्बा की तरह, कई बार हम अपनी दिशा से भटक जाते हैं और ऐसी बातों में दिलचस्पी लेने लगते हैं, जो परमेश्वर की पवित्रता से मेल नहीं खातीं। सिज़्बा के लिए यह देखना आवश्यक था कि राजा बनने के लिए जिसके लिए उसका जन्म हुआ था, उसका रहन-सहन कैसा होना चाहिए। पौलुस के शज़्दों से हमें पवित्र जीवन बिताने के लिए सहायता मिलती है, जिनसे परमेश्वर की महिमा हो:

> इसलिए तुम अब विदेशी और मुसाफिर नहीं रहे, परन्तु पवित्र लोगों के संगी स्वदेशी और परमेश्वर के घराने के हो गए। और प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं की नेव पर जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान होने के लिए एक साथ बनाए जाते हो (2:19-22)।

इस पद का केन्द्रीय भाव यह है कि *परमेश्वर मसीही लोगों को पवित्र मन्दिर बनाना चाहता है जिसमें वह स्वयं वास करता है।*

एक मसीही के रूप में, आपके लिए अपने आप को समझना आवश्यक है। आप उस विशाल मन्दिर का एक भाग हैं, जिसे परमेश्वर अपने लिए बना रहा है। इस हवाले को देखते हुए, हमें पता चलता है कि परमेश्वर हमसे क्या चाहता है।

नींव

पौलुस ने *नींव* से आरम्भ करके इस पवित्र मन्दिर की तीन विशेष बातों का उल्लेख किया। इस पवित्र मन्दिर की, जिसके मैं और आप भाग हैं, नींव ''प्रेरित और भविष्यवक्ता'' हैं। पौलुस के मन में यह बात महत्वपूर्ण नहीं थी कि वे अर्थात पौलुस, यूहन्ना, पतरस आदि कौन हैं बल्कि यह थी कि उन्होंने इस पवित्र मन्दिर की नींव रखने के लिए क्या किया था। उन्होंने क्या किया? उन्होंने अधिकार से मनुष्यों में परमेश्वर की सच्चाई प्रकट की।

पहली शताब्दी में, परमेश्वर ने ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' पर हमारे विश्वास की आधारभूत सच्चाइयां प्रकट कीं। ये सच्चाइयां हमारे लिए नये नियम में सम्भालकर रखी गई हैं। हमारे जीवनों के लिए एक-मात्र पक्की नींव नये नियम में पाई जाने वाली सच्चाइयों की नींव है (2 तीमुथियुस 3:16, 17)।

अनन्त जीवन के लिए किसी और बात से हमारी अगुआई नहीं हो सकती। किसी तरह की दूसरी बातों से हमारा उद्धार नहीं हो सकता। परमेश्वर तक जाने का मार्ग हमें और किसी प्रकार की बातों से नहीं मिल सकता। अन्य किसी में हमें परमेश्वर के पवित्र मन्दिर के भाग में बदलने की क्षमता नहीं है।

जॉन ग्रिशम ने *द फर्म* और *द क्लायंट* जैसे प्रसिद्ध नॉवल लिखे हैं। उसकी पुस्तकों से लाखों लोगों का मनोरंजन होता है, परन्तु उन पुस्तकों में किसी को अनन्त जीवन दिलाने वाली एक बात नहीं है। हमारे सबसे प्रसिद्ध गीतों में ऐसा कोई सुर नहीं है जो अनन्त जीवन का मार्ग दिखाता हो। आपको अपने स्थानीय समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर या *न्यूज़वीक* या *टाइम* जैसी पत्रिकाओं में कवर स्टोरी के रूप में परमेश्वर तक ले जाने का ढंग नहीं मिलेगा। सदा के लिए जीवित रहने का ढंग केवल ''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' की बातों में ही मिलेगा जो नये नियम में लिखी मिलती हैं। उनकी बातों से एक ऐसा आधार तैयार होता है जिस पर परमेश्वर का पवित्र मन्दिर बनाया जाता है।

कोने के सिरे का पत्थर

पौलुस ने परमेश्वर के पवित्र मन्दिर में पाई जाने वाली दूसरी विशेषता *कोने का पत्थर* होना बताया। यह वह मन्दिर है ''जिस के कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है'' (2:20ख)। बाइबल यशायाह की पुस्तक में आने वाले मसीहा के सम्बन्ध में परमेश्वर के वचन को इस प्रकार लिखती है: ''देखो, मैंने सिय्योन में नेव का एक पत्थर रखा है, एक परखा हुआ पत्थर, कोने का अनमोल और अति दृढ़ नेव के योग्य पत्थर ...'' (यशायाह 28:16)।

इमारत में कोने के पत्थर का प्रमुख स्थान होता है। यह पूरी इमारत को जोड़े रखता है। कोने के पत्थर का महत्व इतना अधिक होता था कि कारीगर इसका इस्तेमाल इस पर राजा का नाम उकेरकर राजा को सम्मान देने के लिए किया करते थे। इस विशेष पत्थर से नींव के टिकाऊपन और पूरी इमारत का पता चलता था।

यीशु अपने लोगों के लिए जोड़े रखने वाली सामर्थ अर्थात कोने का पत्थर है। उसके संपर्क में आकर और अपने जीवन को उसकी इच्छा के अनुसार ढालकर, हम एक दूसरे से मिलकर परमेश्वर की इच्छा के अनुसार पवित्र मन्दिर बनते जाते हैं। दुख की बात है कि हम अक्सर यीशु का अनुसरण करने में नाकाम रहते हैं, जिस कारण पवित्र मन्दिर की तरह दिखाई नहीं देते।

उदाहरण के लिए, यीशु द्वारा यह कहने के बावजूद कि, ''जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे'' (मत्ती 19:6; मरकुस 10:9) मसीही लोगों में तलाक की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। इस बात में हम कोने के पत्थर से जुड़े रहने में असफल रहते हैं।

किसी गैर मसीही व्यक्ति के साथ शराब की पार्टी में शामिल होने वाला एक मसीही नवयुवक अपनी गंदी से गंदी कल्पना में भी यीशु को ऐसा करते हुए कभी नहीं मिल पाएगा। रविवार के दिन कलीसिया में यीशु के गीत गाने वाला व्यपारी व्यक्ति सोमवार को काम पर जाकर कोई सौदा तोड़ने के लिए सच्चाई से समझौता कर सकता है, जबकि यीशु ने ईमानदारी का महत्व सिखाया है। कभी-कभी हम कोने के पत्थर से सम्बन्ध तोड़ बैठते हैं।

हमारे जीवन यीशु के जीवन से मेल खाते होने चाहिए। हम सबके लिए आवश्यक है कि यह देखें कि हमारे काम, विचार, बातें या व्यवहार यीशु से मेल खाते हैं।

स्थानीय मण्डलियों के लिए भी हमें यीशु को कोने के पत्थर के रूप में देखना आवश्यक है। कलीसिया के हमारे परिवार तभी मजबूत हो सकते हैं यदि परिवार के सदस्यों के जीवन यीशु से मेल खाते हों। हमें चाहिए कि हम यीशु की महिमा और उसकी आराधना करते हुए उसे अपनी हर बात में प्राथमिकता दें। हमें चाहिए कि सुसमाचार के द्वारा दूसरों को उसके सम्पर्क में लाएं। इस प्रकार कलीसिया पहले से कहीं अधिक मजबूत हो सकती है।

ईंट-पत्थर

पवित्र मन्दिर की तीसरी विशेष बात *ईंट-पत्थर* है। ईंट-पत्थर कौन हैं? पौलुस ने उनका परिचय इस प्रकार कराया: ''जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवासस्थान

होने के लिए एक साथ बानाए जाते हो'' (2:22)।

पौलुस द्वारा इफिसियों के नाम पत्री लिखे जाने के समय तक यरूशलेम में यहूदी मन्दिर कायम था। अन्यजातियों को उस मन्दिर से बाहर रखा जाता था। वे इसके निकट तो आ सकते थे, लेकिन इसमें प्रवेश नहीं कर सकते थे। आज माउंट रशमोर[1] को देखने के लिए जाने जैसा होगा। पर्यटक एक प्लैटफॉर्म पर खड़े होकर कुछ दूरी से पहाड़ में बनी अमेरिका के चार राष्ट्रपतियों की मूर्तियां देखते हैं। अन्यजाति लोग मन्दिर को केवल इतना निकट से देख सकते थे। जगह-जगह यह संकेत देकर बताया गया था कि अन्यजातियों के लिए एक विशेष बिन्दु से आगे जाना मना था।

अब नये नियम में, नियम बदल गए हैं। आज परमेश्वर के मन्दिर के रूप में कोई विशेष इमारत नहीं है। आज किसी नगर के लिए यह दावा नहीं किया जा सकता कि वहां उसका मन्दिर स्थित है। आज नज़्शे से कोई नहीं बता सकता या ग्लोब पर यह चिह्न लगाकर नहीं कह सकता कि ''यदि आप परमेश्वर का मन्दिर देखना चाहते हैं तो आपको यहां जाना होगा।''

आज ऐसा कोई मन्दिर नहीं है। मसीह में नई जाति बनाने की तरह ही परमेश्वर ने मसीह में एक नया मन्दिर बनाया है। मसीह में आने वाला हर व्यज़्ति उस भव्य मन्दिर में एक जीवित पत्थर बन जाता है।

कुछ समय पहले ही मैंने वाशिंगटन, डी.सी. में होने वाले एक समारोह का टीवी प्रसारण देखा था। यह अमेरिका को एक संगीत में श्रद्धांजलि थी। इस प्रसारण में वाशिंगटन की भव्य इमारतें, जिनमें व्हाइट हाउस, वाशिंगटन मोन्यूमैंट, जैफर्सन मैमोरियल और लिंकन मैमोरियल भी दिखाए गए।

वे इमारतें इकट्ठी नहीं की गईं। वे सज़्मान तथा आदर को दर्शाने के लिए भवन निर्माण की एक शैली को दिखाती हैं। मैं लिंकन मैमोरियल के अंदर खेलने की कल्पना नहीं कर सकता। कुछ कार्य इस प्रकार की इमारतों में नहीं होते ज़्योंकि वे इमारतें किसी और बात का प्रतिनिधित्व करती हैं।

वह इमारत जहां स्थानीय कलीसिया आराधना के लिए इकट्ठी होती है, चर्च अर्थात परमेश्वर का मन्दिर नहीं है। परन्तु आराधना के लिए इकट्ठी हुई, कलीसिया के लिए हम कहते हैं कि वह परमेश्वर का मन्दिर है। हम उसे परमेश्वर का मन्दिर इसलिए कहते हैं कि ज़्योंकि परमेश्वर के लोग वहां हैं। परमेश्वर के लोगों के मिलने को परमेश्वर का मन्दिर कहा जाता है।

कृपया याद रखें कि परमेश्वर अपने मन्दिर को इकट्ठा नहीं करता। उसने अपने पुत्र को संसार में भेजा ताकि वह आपको तैयार करके वह आकार दे सके, जिससे आप उसके मन्दिर का भाग बनने के लिए तैयार हो जाएं।

लोग यरूशलेम में परमेश्वर के मन्दिर को देखने के लिए जाते थे। आज लोग परमेश्वर का वह मन्दिर देखने के लिए जो परमेश्वर की महिमा करता है, कहां जाते हैं? आज वह मन्दिर मसीही लोग ही हैं। परमेश्वर की महिमा की झलक जो उनमें मिलती है वह झलक उन्हीं में है जो मसीह के हैं!

वे ज़्या देख रहे हैं? कलीसिया के रूप में हम परमेश्वर के बारे में उन्हें ज़्या बताते हैं?

ज़्या वे हम में उसके प्रेम, उसकी करुणा, उसकी सज़्भाल, उसकी पवित्रता तथा उसके धीरज को देखते हैं ? ज़्या वे हमारे द्वारा वह सब कुछ देखते हैं जो परमेश्वर उन्हें दिखाना चाहता है ?

परमेश्वर के मन्दिर के पास आकर लोग ज़्या देखते हैं ? मसीही लोग तो उस मन्दिर के ईंट-पत्थर हैं। आप और मैं परमेश्वर के उस मन्दिर का, जो इस संसार में है, केवल एक भाग हैं। यह कैसा मन्दिर है ?

सारांश

जंगल का होने वाला राजा, सिज़्बा, जीवन के एक ऐसे दौर में चला गया जहां वह भूल गया कि वह ज़्या है। उसे याद दिलाना आवश्यक था कि वह तो राजा का पुत्र है।

2:19-22 में, वास्तव में पौलुस कह रहा था, ''तुज़्हें परमेश्वर के मन्दिर बनना चाहिए। परमेश्वर को पत्थर, गारे या लकड़ी से बने मन्दिर की आवश्यकता नहीं है। उसकी इच्छा किसी ऐसे मन्दिर में रहने की नहीं है, जिसे नज़्शे में देखकर आप कह सकें कि यही वह मन्दिर है। वह तो अपने लोगों के मनों में वास करना चाहता है। वह उन परिवर्तित हुए जीवनों में अपनी महिमा दिखाना चाहता है। वह चाहता है कि लोग उसे उस प्रकार दिखाएं जैसा वह वास्तव में है।''

ज़्या लोग हम में उस परमेश्वर को देख सकते हैं, जो अपने लोगों में वास करता है। ज़्या लोग आपके क्षेत्र की स्थानीय कलीसिया में इतनी भलाई देखते हैं जिससे वे परमेश्वर की महिमा करना चाहें ?

इस हज़्ते अपने जीवन को अलग रोशनी में देखें। आप केवल अपनी जीविका ही नहीं कमा रहे, घर की देखभाल करने वाले ही नहीं, स्कूल जाने वाले, सौदा खरीदने वाले, खेलने वाले या निवेश करने वाले ही नहीं हैं। लोगों को यीशु के सज़्पर्क में लाते हुए आप परमेश्वर के साथ काम कर रहे हैं। इस सप्ताह आप जिस भी व्यज़्ति से मिलें, परमेश्वर चाहता है कि वह उसके पवित्र मन्दिर का भाग बन जाए। उसके हृदय में उनमें से हर एक के लिए जगह है।

यह मत भूलें कि आप ज़्या हैं। यदि लोगों को परमेश्वर के पवित्र मन्दिर की महिमा देखनी हो, तो वह आप और मुझ में ही देखेंगे।

टिप्पणी

[1]माउंट रशमोर अमेरिका में रैपिड सिटी के दक्षिण पश्चिम में 23 मील दूर स्थापित एक राष्ट्रीय स्मारक है। ज़्लैक हिल देखने के लिए जाने वाले पर्यटकों के लिए यह एक दर्शनीय स्थल है। जिसमें पहाड़ काटकर अमेरिका के चार प्रसिद्ध राष्ट्रपतियों (जॉर्ज वाशिंगटन, थॉमस जैफर्सन, अब्राहम लिंकन और थियोडोर रूसवैल्ट) की विशाल आकृतियां बनाई गई हैं। शाम के समय लाइटिंग सेरेमनी में माउंट रशमोर की सुन्दरता ग्रेनाइट के पहाड़ पर रोशनी होने से उन मूर्तियों पर पड़ने वाले प्रकाश से देखते ही बनती है। -अनुवादक